तीन अंधे चूहे

तीन अंधे चूहे

"तीन अंधे चूहे" वाली कहानी काफी पुरानी है. पॉल गैल्डन को यह कहानी बच्चों की किताबों के एक प्राचीन ब्रिटिश संग्रह में मिली. उन्होंने उसे दुबारा से लिखने और चित्रित करने का फैसला किया. इस तरह एक पुरानी कहानी - जो वास्तव में काफी भयावह थी का रूपांतरण और पुनर्जन्म हुआ.

तीन छोटे चूहों ने
कुछ मस्ती करने का मन बनाया

उन्होंने कहीं घूमने का मन बनाया,
उन्होंने कहा, "यहाँ घर पर पड़े रहना
बड़ा उबाऊ है."

उन्होंने अपने साथ में और कोई सामान नहीं लिया.
अपने साथ में सिर्फ एक कंघी ली, उन तीन छोटे चूहों ने.

फिर वो तीन साहसी चूहे
एक सराय में पहुंचे
"नमस्कार,
क्या हमें यहाँ सोने के लिए
बिस्तर मिलेगा?"

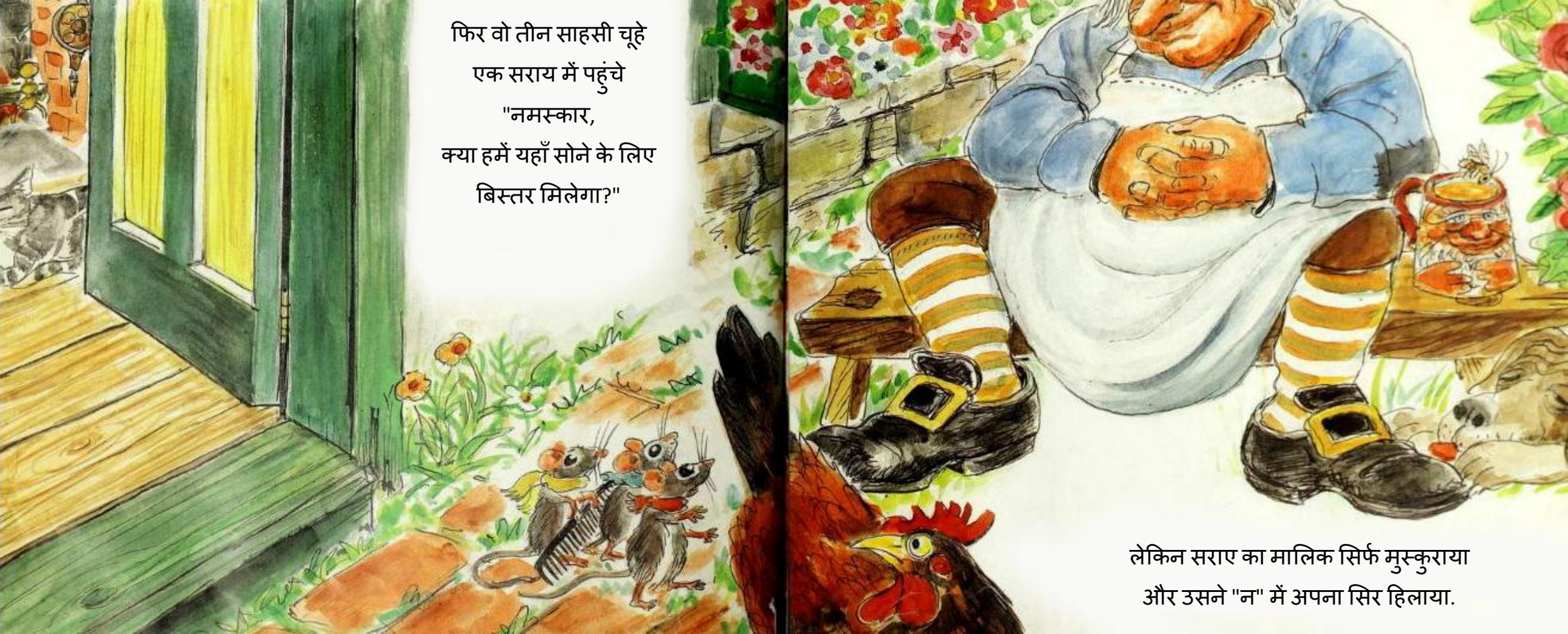

लेकिन सराए का मालिक सिर्फ मुस्कुराया
और उसने "न" में अपना सिर हिलाया.

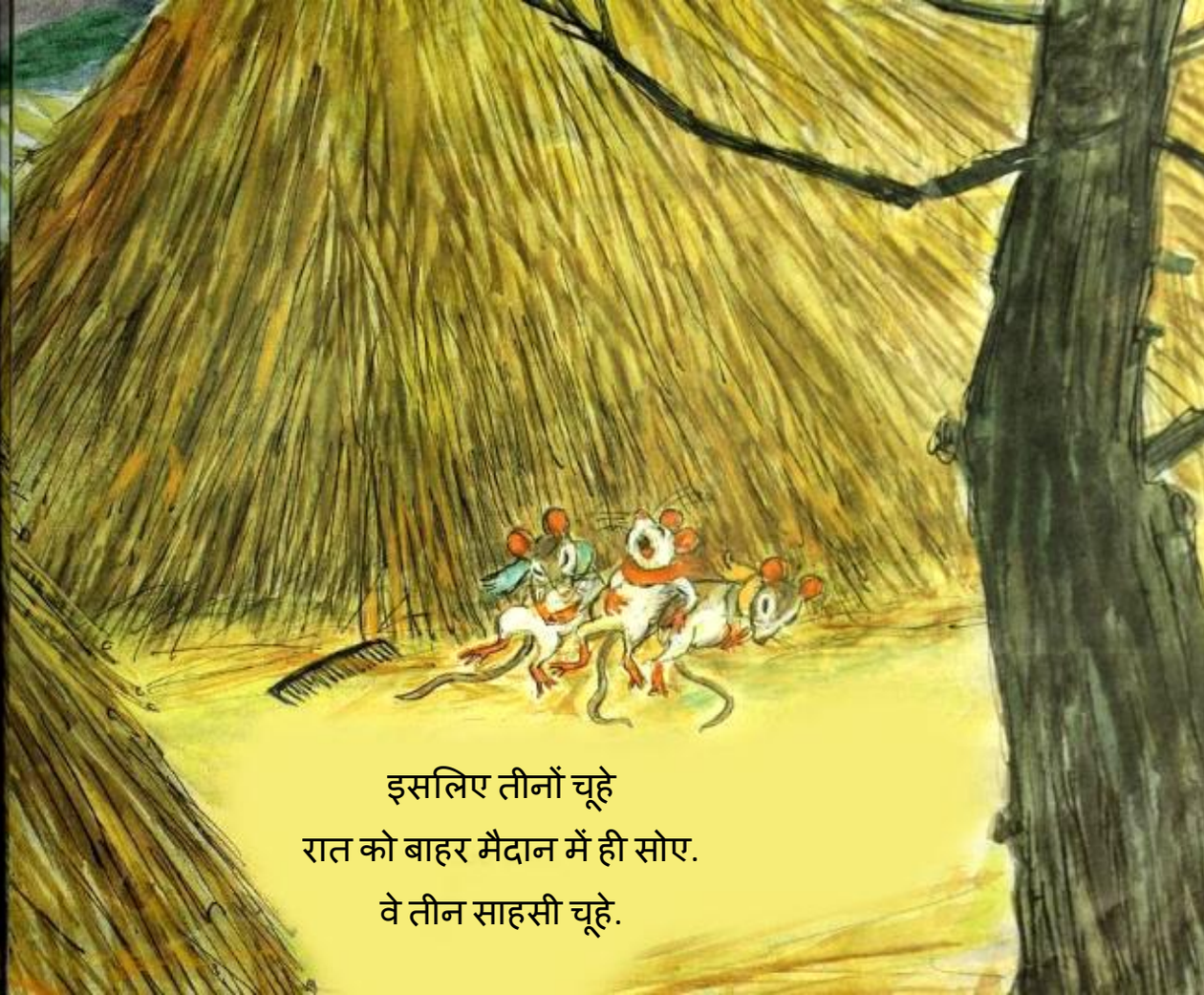

इसलिए तीनों चूहे
रात को बाहर मैदान में ही सोए.
वे तीन साहसी चूहे.

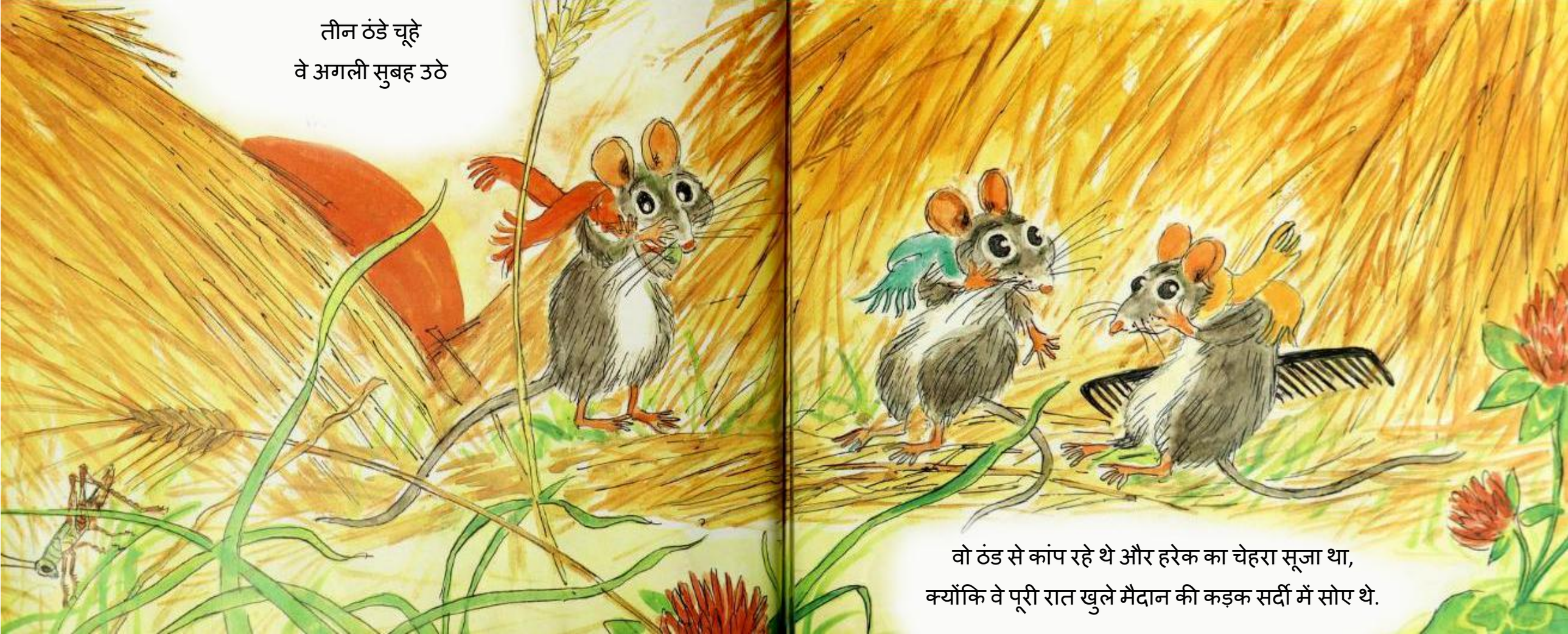

तीन ठंडे चूहे
वे अगली सुबह उठे

वो ठंड से कांप रहे थे और हरेक का चेहरा सूजा था,
क्योंकि वे पूरी रात खुले मैदान की कड़क सर्दी में सोए थे.

इसलिए वे सुबह काफी जल्दी उठे
और वो जगह छोड़ी,
उन तीनों ठंडे चूहों ने.

तीन भूखे चूहों ने
कुछ खाने के लिए खोजा,

लेकिन उन्हें सिर्फ एक अखरोट का छिलका मिला
जो एक सूखे कुएँ के किनारे पड़ा था.
अखरोट किसने खाया था? यह भी पता नहीं था, उन तीन भूखे चूहों को.

फिर तीन भूखे चूहे,
एक खेत में पहुंचे,

वहां एक किसान रोटी और पनीर खा रहा था.
इसलिए वे चूहे अपने घुटनों पर बैठे
और उन्होंने हाथ जोड़कर कहा,

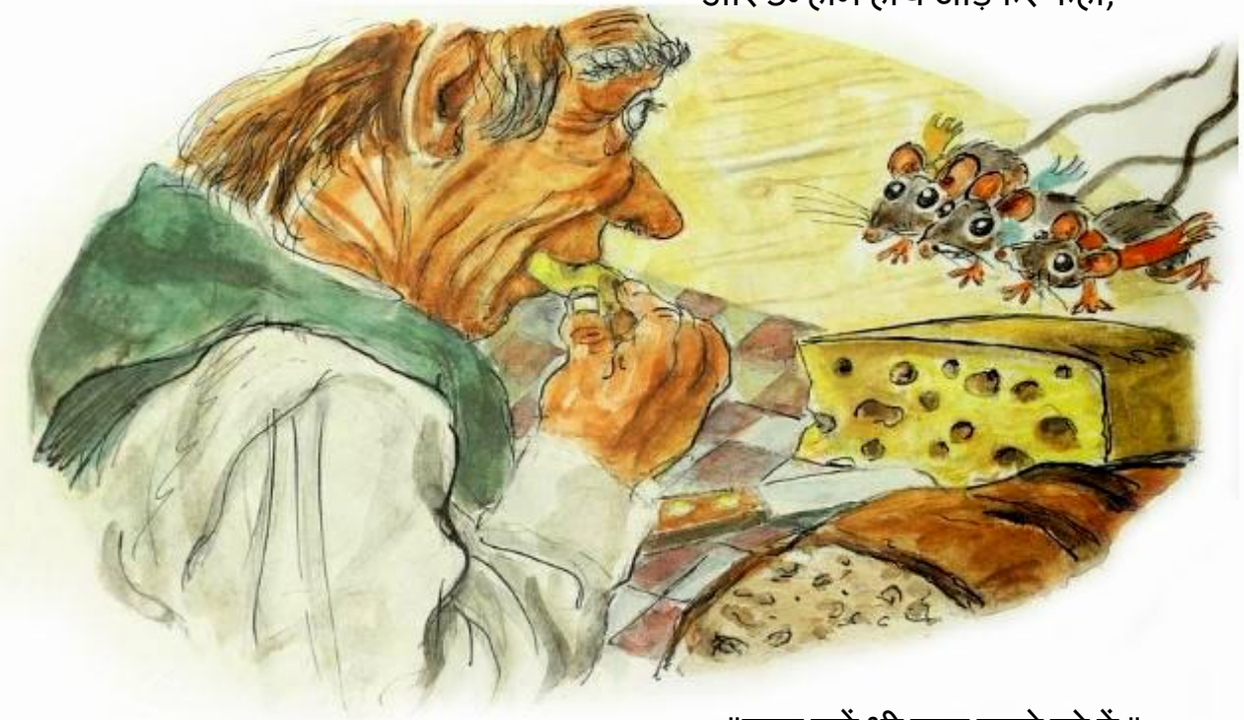

"कृपा हमें भी कुछ खाने को दें,"
उन तीनों भूखे चूहों ने कहा.

तीन सुखी चूहों ने
पेट भरकर खाया
दिल भरकर खाया

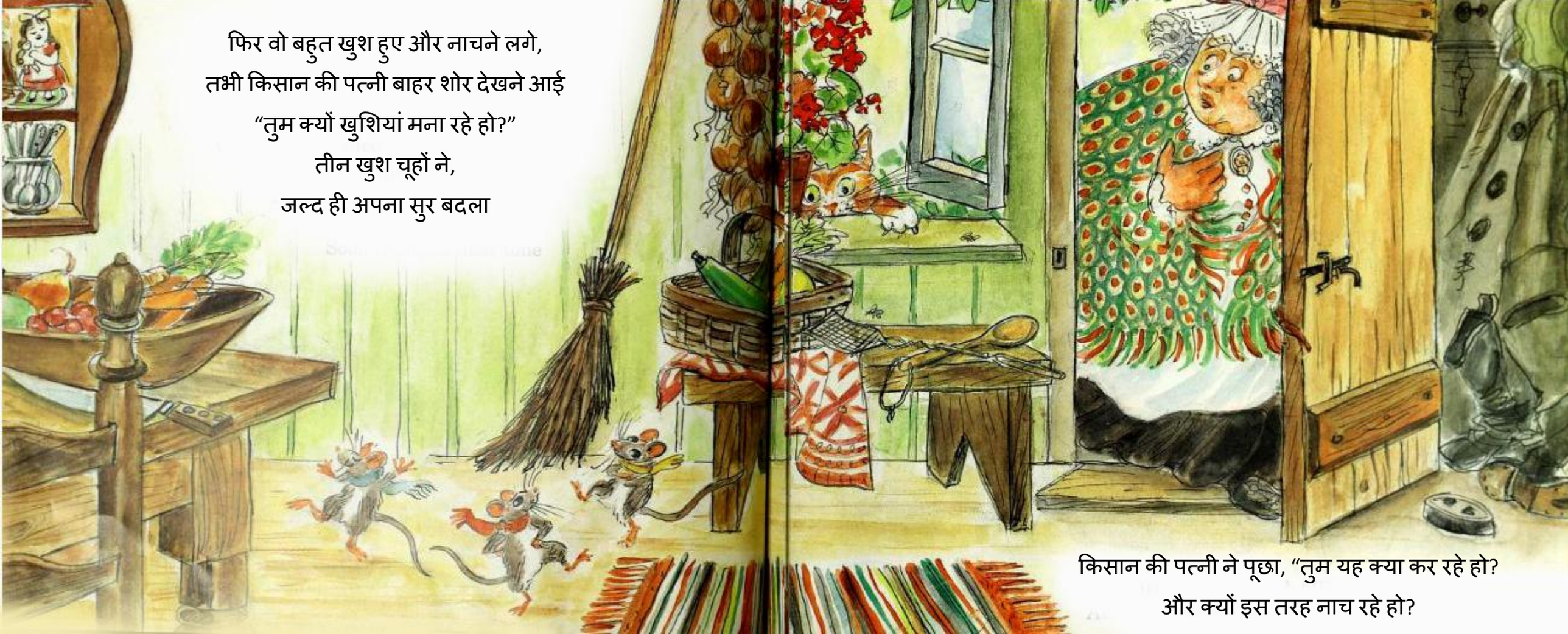

फिर वो बहुत खुश हुए और नाचने लगे,
तभी किसान की पत्नी बाहर शोर देखने आई
“तुम क्यों खुशियां मना रहे हो?”
तीन खुश चूहों ने,
जल्द ही अपना सुर बदला

किसान की पत्नी ने पूछा, “तुम यह क्या कर रहे हो?
और क्यों इस तरह नाच रहे हो?

बस थोड़ा इंतज़ार करो,
मैं एक बिल्ली लाऊँगी
फिर तुम शरारती चूहों
की शामत आएगी."

फिर तीनों चूहे वहां से डर के मारे
अपनी जान बचाकर भागे

"बिल्ली" का नाम सुनते ही उनके दांत किटकिटाए.
जान बचाने के लिए वे तुरंत खिड़की से बाहर कूदे.

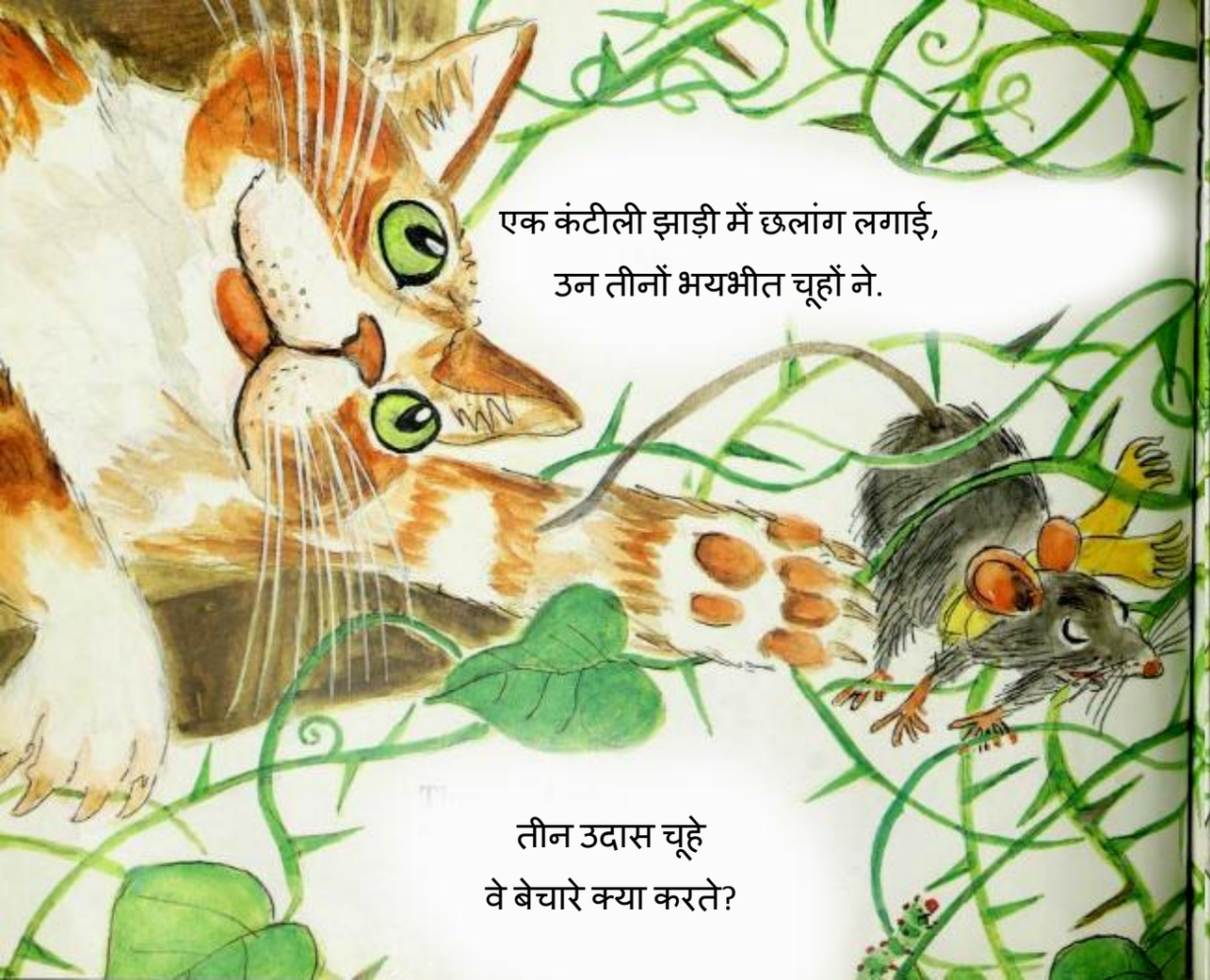

एक कंटीली झाड़ी में छलांग लगाई,
उन तीनों भयभीत चूहों ने.

तीन उदास चूहे
वे बेचारे क्या करते?

कंटीली झाड़ी बड़ी निर्दयी निकली,
काँटों ने उनकी आँखें खरोंच दीं
और उन्हें अंधा बना दिया,

फिर घर वापस जाने का
रास्ता तक न ढूंढ पाए, वो तीन उदास चूहे.

तीन अंधे चूहे
देखो वो कैसे दौड़े!
वे किसान की पत्नी के पीछे भागे!
किसान की पत्नी ने एक धारदार चाकू से
उन तीनों चूहों की पूंछें काट डालीं,

क्या आपने पहले कभी ऐसा नजारा देखा,
तीन अंधे चूहों का?

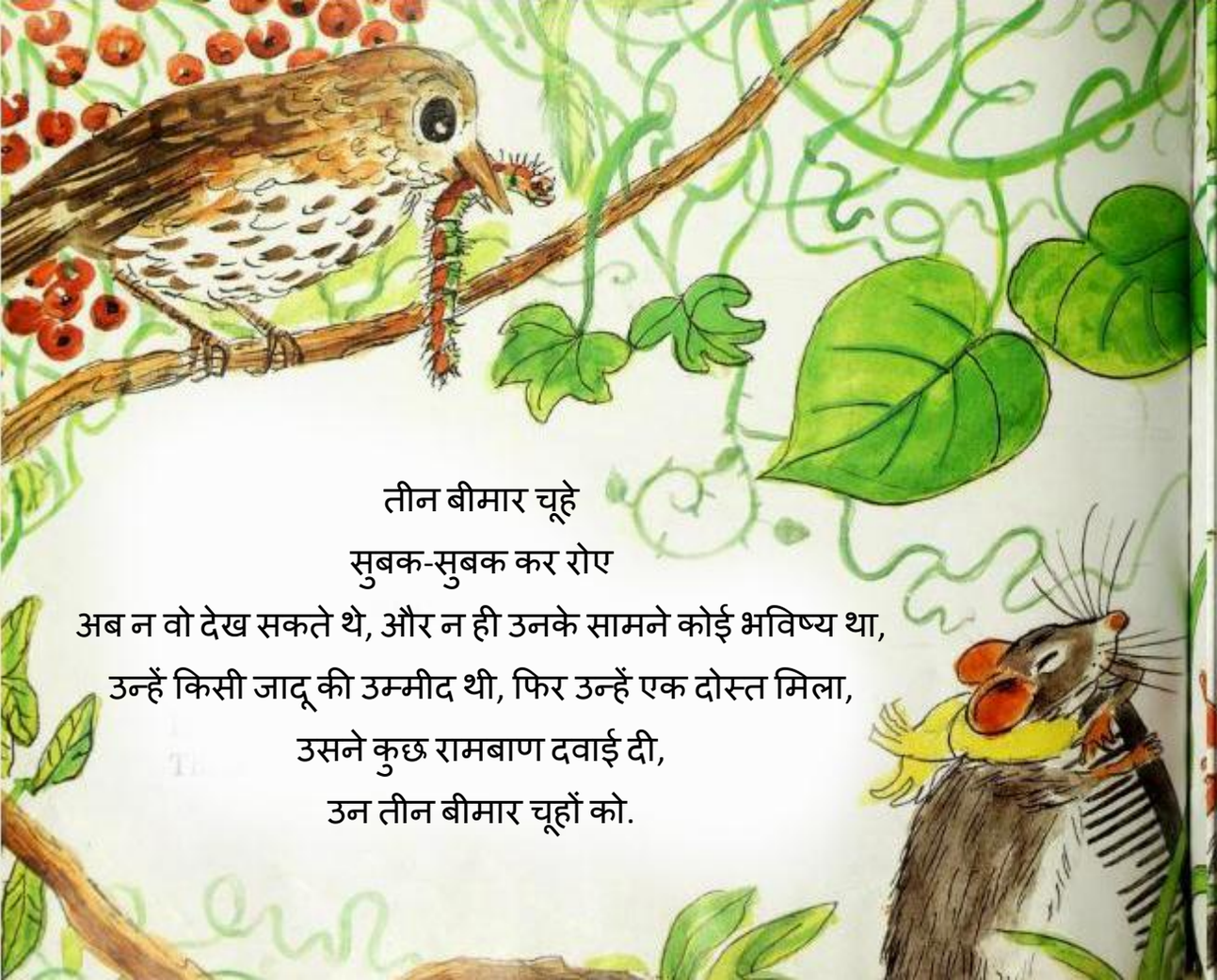

तीन बीमार चूहे
सुबक-सुबक कर रोए
अब न वो देख सकते थे, और न ही उनके सामने कोई भविष्य था,
उन्हें किसी जादू की उम्मीद थी, फिर उन्हें एक दोस्त मिला,
उसने कुछ रामबाण दवाई दी,
उन तीन बीमार चूहों को.

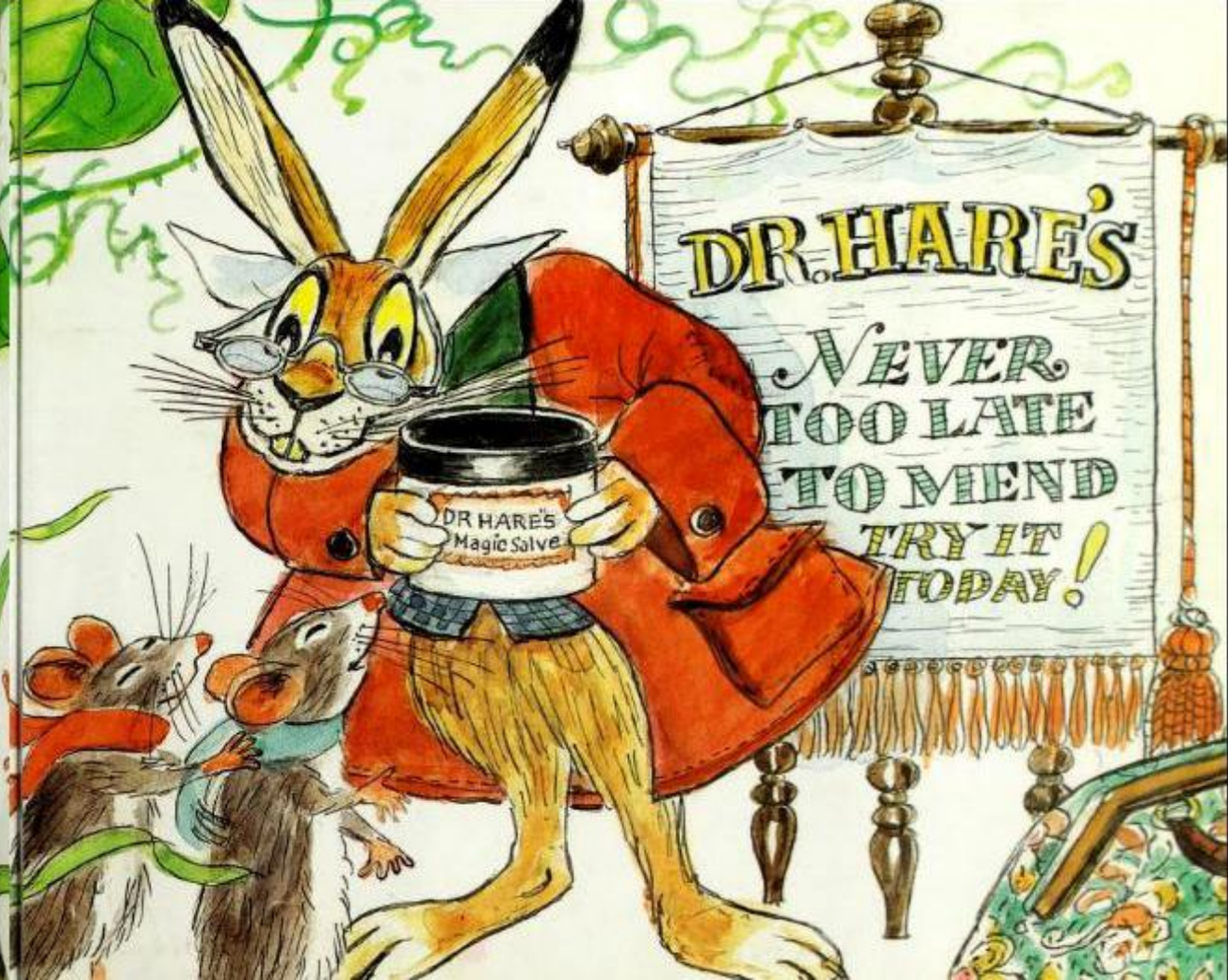

तीन ज्ञानी चूहों ने
वो दवाई पी

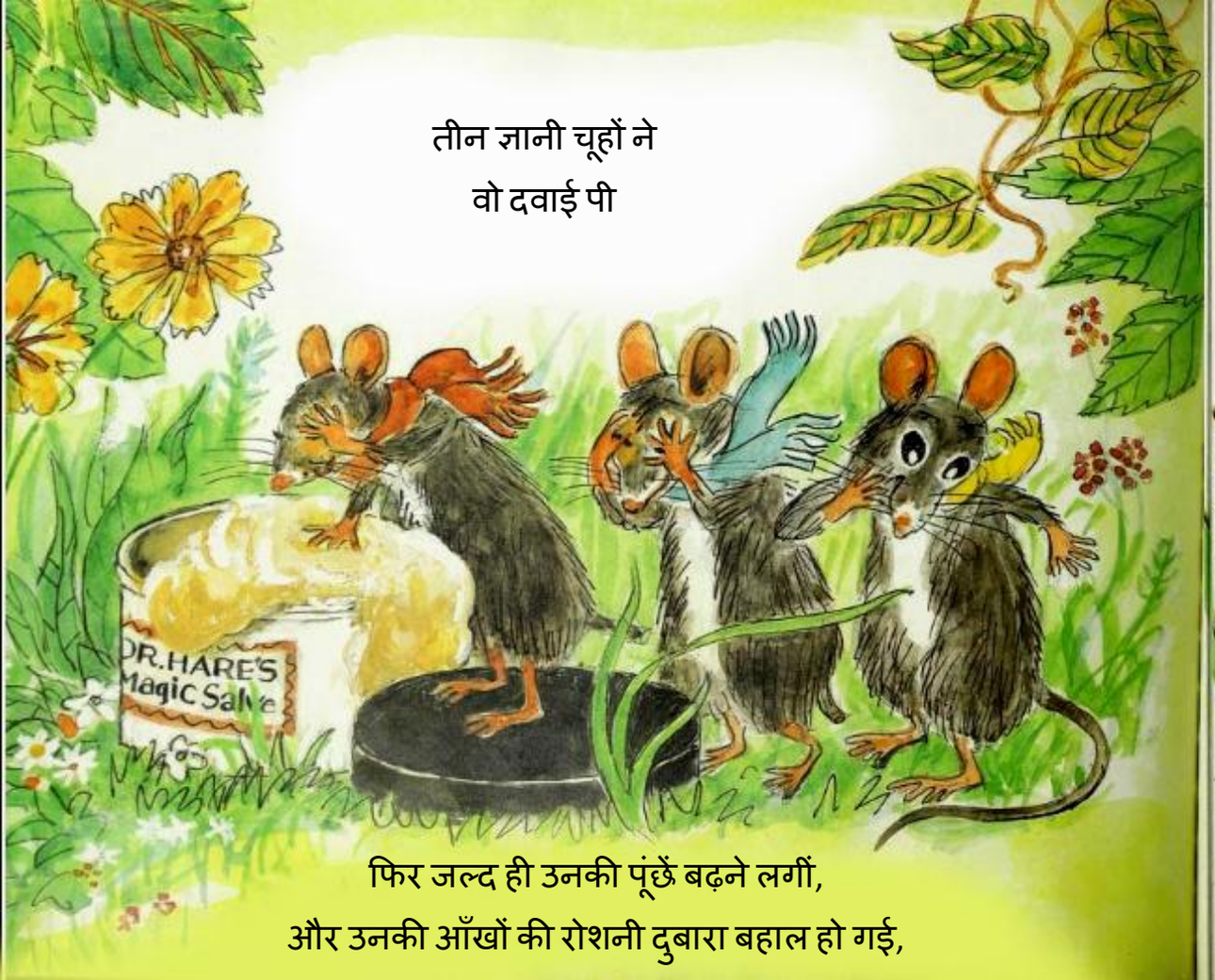

फिर जल्द ही उनकी पूंछें बढ़ने लगीं,
और उनकी आँखों की रोशनी दुबारा बहाल हो गई,

जब उन्होंनें तालाब में देखा तब उन्हें उसका यकीन हुआ.

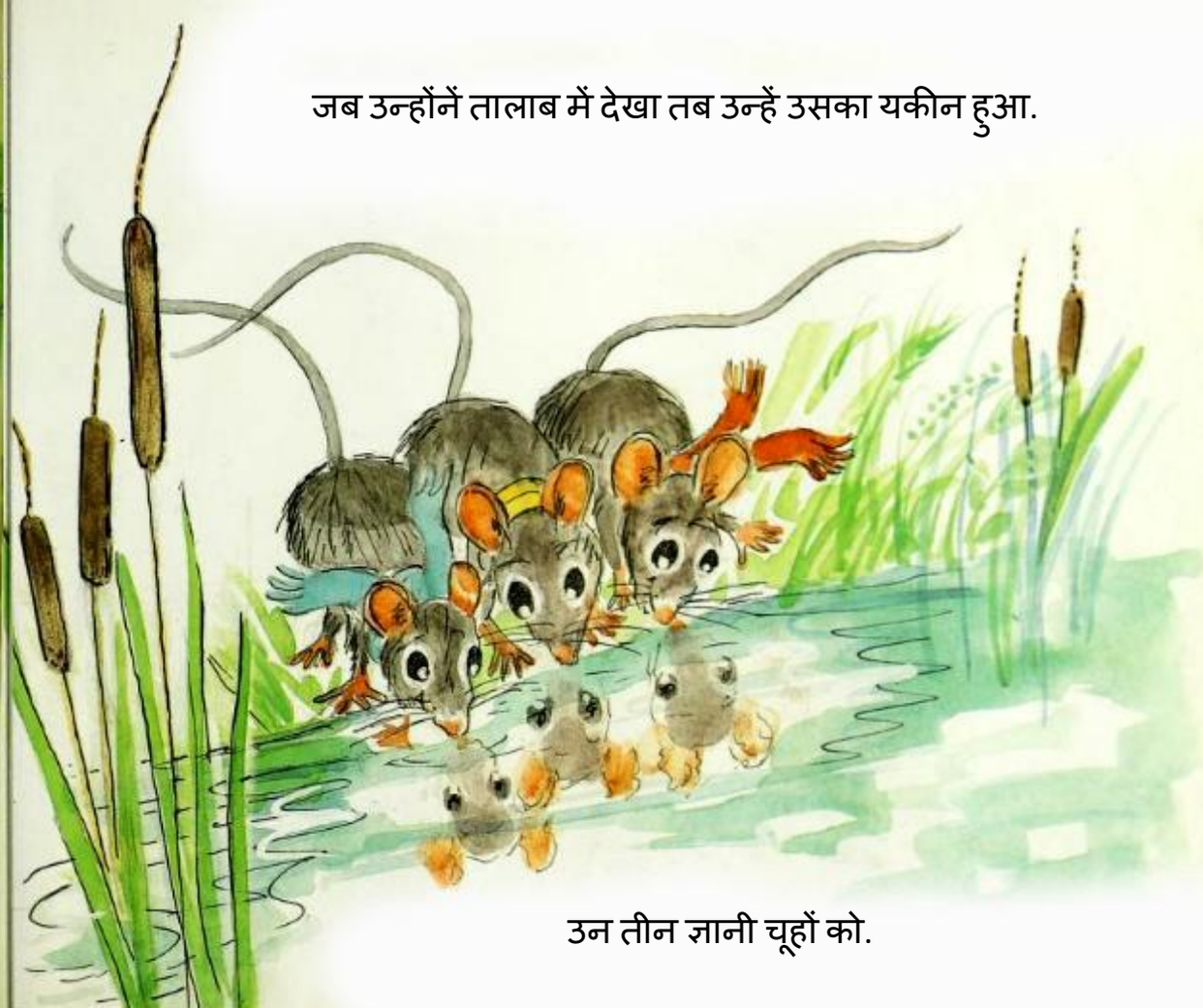

उन तीन ज्ञानी चूहों को.

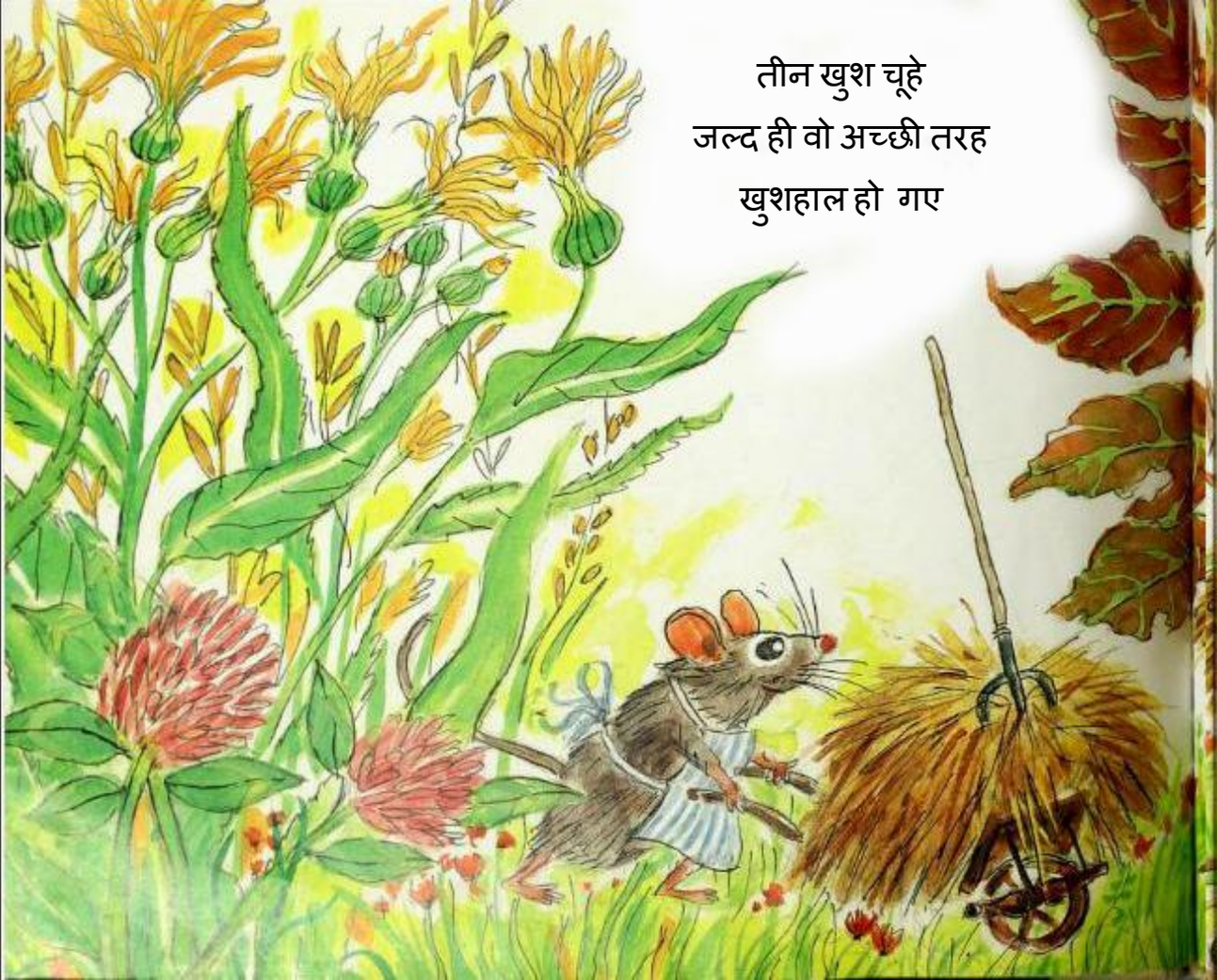

तीन खुश चूहे
जल्द ही वो अच्छी तरह
खुशहाल हो गए

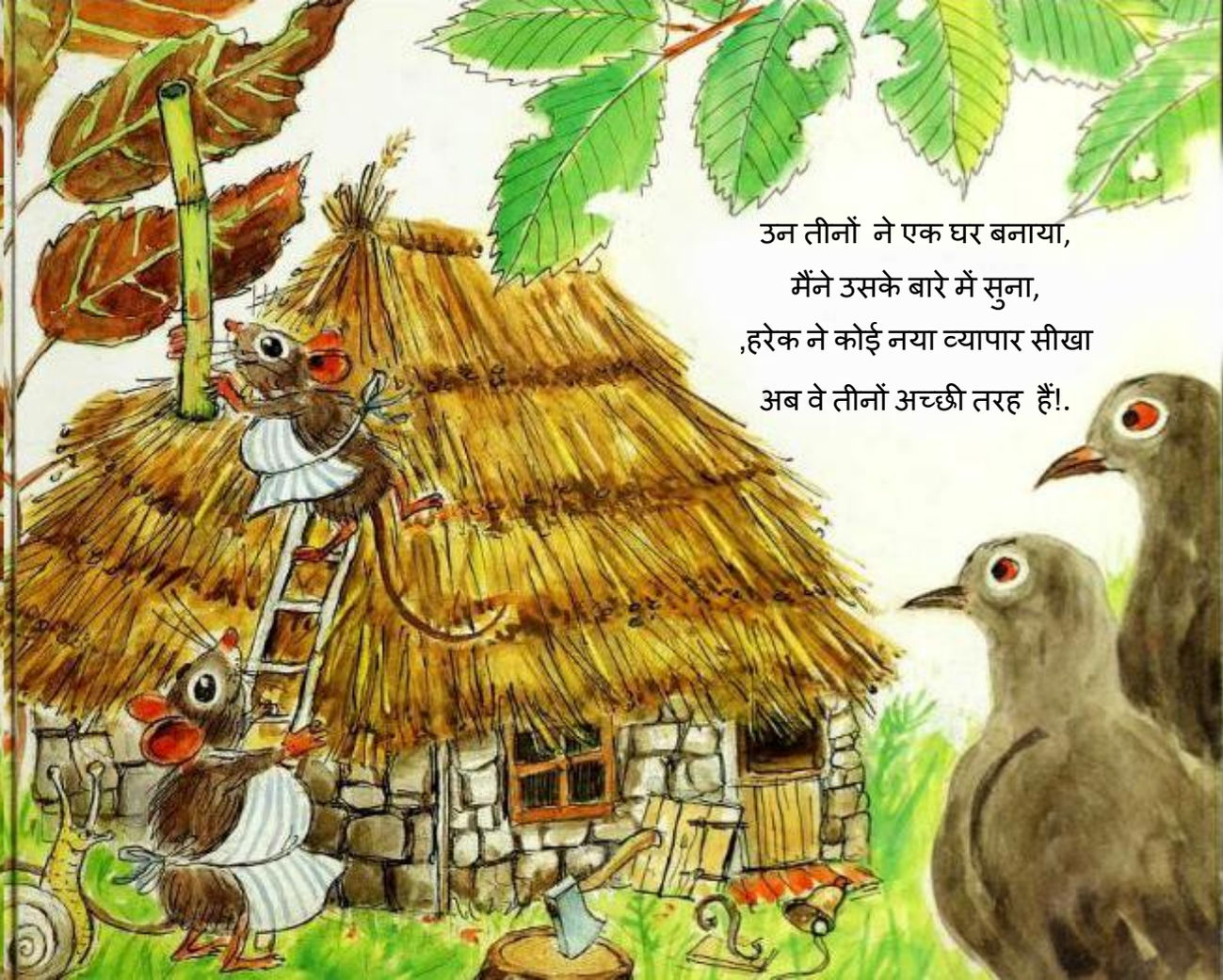

उन तीनों ने एक घर बनाया,
मैंने उसके बारे में सुना,
,हरेक ने कोई नया व्यापार सीखा
अब वे तीनों अच्छी तरह हैं!.

यदि आप उनसे बात करना चाहते हैं,
तो आप टेलीफोन करें, उन तीन खुश चूहों को.

अंत